नाड़ी ज्योतिष परम्परा

डॉ0 बिपिन पाण्डेय

भारतीय ज्योतिष के अन्तर्गत नाड़ी शब्द अनके अर्थो में प्रयुक्त हुआ है। मुहूर्त के ग्रन्थों में नाड़ी चक्र वर्षाज्ञान में नाड़ी का प्रयोग तथा होरा चक्र में आदि मध्य एवं अन्त्य नाड़ी का प्रयोग प्राप्त होता है। तृ नाड़ी के साथ पेयनाड़ी का उल्लेख ज्योतिष में किया गया है। परन्तु यह नाड़ी जातक अथवा नाड़ी के माध्यम से होरा शास्त्र के फल को कहने की पद्धति इन सब नाड़ियो से भिन्न है। नाड़ी शब्द यहां पर परिभाषित नहीं है बल्कि काल तथा अवस्था का बोधक है। जातक में नाड़ी का प्रयोग अत्यन्त सूक्ष्म स्थिति को बतलाने वाला माना गया है। इस परम्परा का विकास कब हुआ इसका वास्तविक ज्ञान नहीं हो पाया है परन्तु नाड़ी जातक की परम्परा कदाचित जातकशास्त्र के बाद विकषित हुई होगी। जातकशास्त्र के जो ग्रन्थ मिलते है उनमें नाड़ी का उल्लेख नहीं है। लघु पराशरी, वृहदपराशर होरा शास्त्र बृहद्जातक, लघुजातक आदि अनेक जातक ग्रन्थों में नाडी जातक का उल्लेख तक नही है। इससे पता चलता है कि ये परम्परा सुदूर दक्षिण के तमिलनाडु, केरल आदि प्रदेशों में विकसित हुयी जिसका ज्ञान गोपनीय रखा गया और जातक के अन्यान्य ग्रन्थों की भांति इसका प्रकाशन नहीं किया गया क्योंकि नाड़ी परम्परा के अन्तर्गत ज्यादातर जो ग्रन्थ मिलते हैं वे दक्षिण भारत में प्राचीन ग्रन्थ लिपि में लिखे गये है। (यह प्राचीन तमिल की ग्रन्थ लिपि है)

नाड़ी जातक अत्यन्त चमत्कारिक शास्त्र है। और इनमें भूत वर्तमान एवं भविष्य का फल स्पष्टतया लिखा गया है। नाड़ी ग्रन्थ परम्परा की दृष्टि से तीन प्रकार के है–

1. लग्न के सूक्ष्म नाड़ी भाग वाले ग्रन्थ
2. हस्तरेखा अथवा अंगूठे की रेखाओं के द्वारा जन्मपत्री का निश्चय करने वाले नाड़ी ग्रन्थ।
3. केवल जन्मपत्री के माध्यम से फल बतलाने वाले नाड़ी ग्रन्थ –

1– लग्न के सूक्ष्म नाड़ी भाग वाले ग्रन्थ –

नाड़ी के ऐसे ग्रन्थों की परम्परा दक्षिण भारत में विद्यमान है जो लग्न के कई भाग करके प्रत्येक भाग का एक नाम नाड़ी के रूप में रखकर के भविष्य वाणी की पद्धती विकसित करते है। इनमें लग्न को 150 भागों में विभक्त किया जाता है। प्रत्येक भाग किसी विशेष नाड़ी नाम से अंलकृत होता है। जिस भाग में जातक का जन्म हुआ होता है उसे उस भाग की नाड़ी लग्न में रखी जाती है। और पुनः इसी प्रकार द्वादश भाव की नाड़ियां भी निकाल ली जाती है। इन नाड़ियों के माध्यम से फल कथन किया जाता है। ऐसी नाड़ी जातकों में प्रत्येक नाड़ी के फल लिखे होते है। उनमे वर्ष के माध्यम से और कही–कही दशा के माध्यम से फल बतलाया जाता है। ऐसे ग्रन्थों में देवकेरलम्, चन्द्रकला नाड़ी आदि ग्रन्थ प्रमुख है।

हस्त रेखा अथवा अंगूठे की रेखाओं के द्वारा जन्मपत्री का निश्चय करने वाले नाड़ी ग्रन्थ–

ऐसे भी नाड़ी ग्रंथ उपलब्ध होते है जो हस्त रेखा अथवा अंगूठे के प्रिंट के माध्यम से भविष्य फल का कथन कराते है। इस प्रकार के ग्रंथ दक्षिण भारत में कुछ ज्योतिषियो के पास है ये ताम्र पत्र पर ग्रंथ लिपि (प्राचीन तमिल लिपि) में लिखे गये है। इस तरह का कोई ग्रन्थ प्रकाशित अवस्था में विद्यमान नहीं है। परम्परा के अनुसार कोई जातक जब ज्योतिषी के पास जाता है। वो ज्योतिष की इस चमत्कारिक विद्या में ज्योतिषी अंगूठे के प्रिंट के माध्यम से ताड़ पत्र में लिखित जन्म पत्रिका का मिलान करता है। एक ही लग्न की 7, 8, जन्म पत्रियों का फल पढ़ा जाता है। इसमें कही जातक के माता–पिता का नाम तो कही–कही दादी बाबा का नाम अथवा संम्बन्धी का नाम लिखा रहता है। उसकी भूत कालीन घटनायें लिखी होती है। जातक घटनाओं को अपने जीवन से मिलान करता है तथा माता–पिता के नाम से जिन्हे ठीक समझता है

उस पत्री का अर्थ ज्योतिषी से लिखवा लेता है। इनमें किसी दशा का उल्लेख नहीं किया गया है। नाड़ी ग्रन्थों में वर्षो के माध्यम से प्रमुख घटनाओं एवं उनके संकटों आदि का उल्लेख रहता है कही–कही विलक्षण मंत्रों के द्वारा तथा अनुष्ठान के माध्यम से कष्टकारी ग्रहों का निवारण भी उल्लिखित है। कभी–कभी ऐसा भी होता है उस जातक की जन्मपत्री अंगूठे अथवा हाथ की प्रिन्ट के आधार पर नहीं मिलती है। लाल किताब का एक भाग ऐसा है जिसमे हस्त रेखा और जन्मपत्री का परस्पर विनिमय प्रदर्शित किया गया है। ध्यान से अध्ययन करने पर इसके माध्यम से भी हस्त रेखा के द्वार जन्मपत्री बनायी जा सकती है। लेकिन यह कठिन प्रक्रिया है। लाल किताब के माध्यम से हस्त रेखा द्वारा जन्मपत्री बना लेने पर फल कथन की कोई सटीक पद्धति लाल किताब में नहीं है जैसे की नाड़ी ग्रन्थों में उल्लिखित है।

केवल जन्मपत्री के माध्यम से फल कहने वाली नाड़ी – केवल जन्मपत्री के माध्यम से फल कहने की पद्धति भृगुसंहिता और रावण संहिता में हैं। इसके अतिरिक्त सप्तर्षि नाड़ी और शुक्रनाड़ी में भी जन्मपत्री के माध्यम से जातक के भविष्य का फलकथन किया जाता है। इन ग्रथों में अनेको जन्मपत्रियां बनी हुयी है। जातक की जन्मपत्री जिसमें पूर्णतया मिल जाती है उससे जातक का फल बताया जाता है। भृगुसंहिता में कई खण्ड है। प्रश्न, अनुष्ठान, बालक, स्त्री जातक आदि विषयों पर अध्याय लिखे गये है। रावण संहिता और सप्तऋषि नाड़ी में भी ऐसी ही विधि से जातक का फल बतलाया जाता है। सर्वप्रथम जातक ज्योतिषी के पास अपनी जन्मपत्री लेकर जाता है। इन संहिताओं में पत्री को ढूढता है। यदि उसकी जन्मपत्री पूर्णतया मिल जाती है तो उसका लिखित फल सही उतरता है। इसमें भी वर्षो के आधार पर फल कहने की पद्धति है। किसी दशा अथवा गणित की विधि से कोई फल कथन नही किया जाता है। अनिष्ट ग्रहों उपचार विशिष्ट तांत्रिक मंत्रो द्वारा उल्लिखित है। इनमे कुछ ग्रंथ प्रकाशित भी हो चुके है।

नाड़ी ज्योतिष –

भृगु संहिता – भृगु संहिता एक प्रसिद्ध नाड़ी ग्रंथ है जिसमें जन्मपत्री और उसमें स्थित ग्रह तथा नवांश के माध्यम से जातक के फलित का निर्देश किया जाता है। भृगु संहिता यद्यपि अनेक स्थानों से प्रकाशित है परन्तु ये ने तो पूर्ण है और न ही वास्तविक भृगु संहिता है। ज्योतिर्विदों ने इसका निरीक्षण कर कहा है कि यह यदि तौली जाये तो कई टन में होगी। ऐसी भृगुसंहिता ग्रन्थ किसने लिखा यह ज्ञात नहीं हो सका है। इसके विषय में एक पौराणिक कहानी का आश्रय लिया जाता है कि एक बार महर्षि भृगु ने कौन सा देवता श्रेष्ठ है यह जानने के लिए सभी देवताओं के पास गये परन्तु उन्हें सभी में तमोगुण दर्शन हुए परन्तु जब भृगु विष्णु के पास गये तो वे लक्ष्मी के साथ शयन कर रहे थे तो विष्णु ने उठ करके भृग का स्वागत नही किया तो भृगु ने उसके वक्ष पर प्रहार किया भगवान जागकर भृगु के पैर सहलाने लगे और कहा कि आपके कोमल पैर मेरे वज्र सद्वश वक्ष स्थल से टकराकर चोट खा गये है तो महर्षि भृगु रोने लगे और पूर्ण सतो गुणों के दर्शन किये किवदन्ती है कि इससे लक्ष्मी जी भृगु से अप्रसन्न हो गयी और उन्होंने भृगु को ही नही अपितु सम्पूर्ण ब्राह्मण जाति को शाप दे दिया कि वे निर्धन वे दरिद्र रहेगे। लक्ष्मी के उस शाप को दूर करने के लिये कहा जाता है कि भृगु ने भृगुसंहिता का निर्माण किया व यह घोषणा की जिन विप्रो को भृगु संहिता का ज्ञान होगा वह कभी निर्धन नहीं रहेगे इसमें ऐसा ज्योतिष का चमत्कार कर दिया है कि इससे लोग लाभान्वित होगे।

भृगु संहिता की पाण्डुलिपियां –

भृगुसंहिता संस्कृत अप्रभ्रंश या प्राकृत मिश्रित शैली में लिखा गया एक ग्रंथ है जिसमें व्याकरण की अशुद्धियो के साथ श्लोक प्राप्त होते है। भृगुसंहिता की पाण्डुलिपियां देश विदेश के विभिन्न पुस्तकालयों में प्राप्त होती है। भृगुसंहिता की एक प्रति जिसमें मेष से मीन लग्न पर्यन्त जन्मपंत्री बनी हुई है महराजा सपोरि सरस्वती महल लाइब्रेरी तंजौर में स्थित है। यह देवनागरी लिपि में लिखी है व उसमें ढाई हजार पोलियां है। यह भृगु संहिता कीटो द्वारा काटी हुई व जर्जर अवस्था में है। भृगु संहिता की एक प्रति रघुनाथ मंदिर जम्मू में है जिसमें वृष लग्न से लेकर कुम्भ लग्न पर्यन्त

जन्मपत्रियां अलग–अलग भागों में प्राप्त होती है। ग्रंथ की लिपि देशी नागरा है जो देवनागरी के समकक्ष है। भृगु संहिता की एक प्रति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की सरस्वती भवन लाइब्रेरी में है परन्तु इसमे जन्मपत्री नही है प्रश्न खण्ड व अन्य कोई विचार भृगु संहिता से सम्बद्ध हो सकता है एक भृगु संहिता संस्कृत परिषद लखनऊ की लाइब्रेरी में विद्यमान है जो नितान्त अपूर्ण व देवनागरी लिपि में है इसके अतिरिक्त भृगुसंहिता की प्रतियों के रखने का दावा बहुत से ज्योतिषी कर रहे है उनमें कुछ ज्येातिषी लखनऊ होशियार पुर, प्रतापगढ़ तथा दिल्ली आदि स्थानों पर है परन्तु किसी के पास पूर्ण भृगुसंहिता नहीं हैं अथवा कुछ भृगुसंहिता जैसा साहित्य दिखाकर लोगो को चमत्कृत करने का प्रयास करते है।

शंकर बालकृष्ण दीक्षित ने पाण्डु लिपि में भृगुसंहिता का अवलोकन किया था और उसके कुछ फल भी अनुभव किए थे। जिसका वर्णन उन्होंने भारतीय ज्योतिष में किया है।

भृगु संहिता के प्रकाशित संस्करण –

भृगु संहिता का कोई प्रामाणिक प्रकाशित नही हुआ है। भृगु संहिता के आधार पर बाजार में मिलने वाला साहित्य नितान्त अप्रमाणिक एवं अपूर्ण है। वैक्टेश्वर प्रेस बम्बई द्वारा कई भागों में प्रकाशित है जिसमें, विवाह प्रकरण तथा प्रश्न खण्ड है।

भृगु संहिता का एक संस्करण लगभग 45 वर्ष पूर्व मेरठ से प्रकाशित हुआ था जिसका चौखम्भा प्रकाशन बनारस ने 2 खण्डों में प्रकाशित किया था परन्तु यह भी वास्तविक नही लगता है क्योकि इसमें वर्ण के अनुसार जन्मपत्री दी गई है और उसमें बृहस्पति तथा शनिचर एवं अन्य ग्रहों के मिलान से जन्मपत्री को मिलान कराया जाता है। यह समीचीन नही लगता। लग्न के अनुसार जन्मपत्रियों का विभाजन तो हैं परन्तु सारी जन्मपत्रिया तदनुरूप नहीं बनी है। ऐसे अप्रमाणिक संस्करण से ज्यातिर्विदों को कोई लाभ नहीं है।

भृगु संहिता का फलादेश –

भृगुसंहिता में लग्न के अनुसार बहुत सी जन्मपत्रियां बनी हुई है और उनका फल 15–20 श्लोको में लिखा प्राप्त होता है। यह संहिता भृगुप्रोत है। संहिता में पहले जन्मपत्री के ग्रहों का राशि के अनुसार निर्देश किया गया है। पुनः वर्षो में प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया गया है। किसी पाण्डुलिपि में भृगुसंहिता शुक्र के द्वारा कही गयी है। फल को कहने के लिए किसी भी प्रकार की गणित का उपयोग नही किया गया है और न ही दशाओं का प्रयोग किया गया है। षडवर्ग में यत्र–तत्र नवांश का ही उल्लेख है। संख्याओं को लिखने की पद्धति *'अंकानांम वमतोगतिः* के अनुसार की गयी है। यथा उपवर्ष को लिखने के लिए वेदाग्नि शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। संहिता में फल कहते समय सम्बोधन का प्रयोग अत्यधिक तथा भाषा अत्यन्त त्रुटिपूर्ण है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें कही–2 सम्बन्धियों के नाम व माता–पिता के नाम तथा उनके पर्यायवाची शब्द प्राप्त होते है। आयु को बताने के लिये केवल वर्ष का प्रयोग किया गया है। किसी प्रकार के साधन की प्रक्रिया नही बतलायी गयी है। जातक के जन्म तथा कार्यक्षेत्र का स्थल भी है। नगरों के नाम के लिए प्राचीन नाम व्यवहार में लाये गये है। परीक्षण के आधार पर इस संहिता में वर्णित जातक की भावी घटनाये 90 प्रतिशत सत्य घटित होती है। भृगु ज्योतिषी सर्वप्रथम जातक की जन्मपत्री भृगुसंहिता में लग्नानुसार ढूढता है पुनः उसका मिलान होने पर फल बतलाता है। यही फलादेश की प्रक्रिया है।

अरिष्ट ग्रहों की शांति के लिए इस संहिता में अनेक मंत्रों का निर्देश दिया गया है। सत्रूद्री, महामृंजय, रूद्राभिषेक, गायत्री तथा दुर्गासप्तशत्री के अनुष्ठान के अतिरिक्त अनेक विचित्र मंत्रो का प्रयोग वर्णित है। यथा कालपक्षी, विकरापक्षी, सुन्दरी आदि। इससे प्रतीत होता है कि इसका सम्बन्ध किसी तंत्र सम्प्रदाय से रहा होगा। इन मंत्रों का निर्देश जातक की जन्मपत्री का फल बताते हुये किया गया है परन्तु मंत्र और अनुष्ठान का उल्लेख वहां प्राप्त नहीं होता है इसके लिये भृगसंहिता का एक भाग जिसे अनुष्ठान खण्ड कहते है, में देखा जाता है। अनुष्ठान खण्ड में सन्तान प्राप्ति, दुर्घटना निवारण, रोग निवारण, तथा अन्य कामनाओं की पूर्ति के साथ–2 इन मंत्रों की विधि भी

वर्णित है। जिन साम्रगियों के माध्यम से हवन का उल्लेख है अथवा दान का निर्देश है उन साम्रगियों का उल्लेख नेपाली अथवा बंगाली भाषा से सम्बन्धित है।

इस भृगुसंहिता में स्त्रीजातक का एक खण्ड है जिसमें स्त्रियों के सौभाग्य या दुर्भाग्य, रूप, रंग और चरित्र का फलित प्राप्त होता है। इसका विषय जातक ग्रन्थों से लिया गया है। भृगुसंहिता के अन्तर्गत प्रश्नकर्ता के प्रश्नाक्षर के एवं समय के, भी माध्यम से प्रश्न का उत्तर देने की विधि वर्णित है। इस प्रकार भृगु संहिता नाड़ी ज्योतिष का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है परन्तु प्रकाशित न होने के कारण इसका लाभ जयोतिर्विदो को प्राप्त न हो पा रहा है जिन ज्योतिषियों के पास इसकी पाण्डुलिपियां थी या प्रतिलिपि उपलब्ध है वे किसी को दिखाना नही चाहते क्योंकि यही उनकी आय का साधन है। यदि ये प्रकाशित हो जाये तो सम्रगज्योतिष समुदाय का एक बहुत बड़ा कार्य सम्भव हो सकेगा।

रावण संहिता –

रावण संहिता की कोई प्रति अद्यावधिपर्यन्त (आजतक) प्रकाशित नहीं है। रावण संहिता की हस्तलिपि देवनागरी लिपि में लिखी गयी है। यह देवरिया के जिले गुरुवलिया गांव में विद्यमान है। पहले इसके स्वामी बागीश्वरी पाठक जी थे। इनके पितामह ज्योतिष के विद्वान थे। उनकी भविष्यवाणी प्रायः सत्य सिद्ध होती थी। इस परम्परा की प्रशंसा इनकी दादी किया करती थी इससे बागीश्वरी पाठक जी के ज्येष्ठ भ्राता बहुत अधिक प्रेरित हुये और ज्योतिष के प्रति अपनी निष्ठा लगाई। पितामह की आयु केवल 36 वर्ष की थी जब वे दिवंगत हुये उस समयपाठक जी के पिता केवल 3 वर्ष के थे पितामह ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी भी कर रखी थी और वो सत्य भी हुई। बागीश्वरी पाठक के अनुसार उनके ज्येष्ठ भ्राता को जो परम्परागत ज्योतिष की शिक्षा मिली उससे वो सन्तुष्ट न हुये। 27 वर्ष की आयु से वो नेपाल भाग गये। दो वर्ष तक वहां रहकर किसी आश्रम में रावण संहिता का अध्ययन करते रहे। वहां से हस्तलिखित प्रति से एक प्रतिलिपि तैयार की। दो वर्ष के पश्चात उनके ज्येष्ठ भ्राता उस प्रतिलिपि को लेकर अपने घर लौटे। ऐसी स्थिति में वो निरन्तर उस प्रति से रातो

दिन पाठ संशोधित करते रहते थे। और उन्होंने बताया कि रावण संहिता से जिसकी जन्मपत्री मिल जाती है उसका भविष्य प्रायः मालूम हो जाता है उस समय बागीश्वरी की आयु मात्र 14 वर्ष की थी। पाठक जी के अनुसार उनके भ्रात ने अपनी जन्मपत्री इस रावण संहिता से मिलाई थी तो उनकी आयु केवल 30 वर्ष लिखी थी अतः वे नेपाल से तुरन्त भागकर घर आये थे और इस संहिता का ज्ञान अपनेछोटे भाई को करा दिया था। 30 वे वर्ष ही उनका देहावसान हो गया था। तब तक उन्होंने संहिता को ठीक से सम्पादित कर लिया था जहां कुछ अक्षर कटे हुये थे वहां स्वयं अपनी बुद्धि से जोड़कर यथा सम्भव परिमार्जन कर लिया था इस रावण संहिता में आदि और अंत के कोई पृष्ठ नहीं है। इसमें भी भावी घटनाये 90 प्रतिशत सही निकलती है।

इस रावण संहिता में 4 अध्याय है।

1. **जन्गमाध्याय**
2. **नागाध्याय**
3. **विश्वम्भराध्याय**
4. **परिव्राजकाध्याय**

इन अध्यायों का सामान्य परिचय अधोलिखित है।

1. **जन्गामाध्याय –** जन्ममाध्याय में सर्वसाधारण की जन्मपत्रियों का फल निहित है। इसमे ऐसे लोगों की कुण्डलियां है जो सामान्य जीवन व्यतीत करते रहते है। गरीब किसानों, छोटे–मोटे व्यापारी, तृतीय चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की कुण्डली प्रायः इस अध्याय में प्राप्त हो जाती है। यदि उनका आगे उत्थान होने वाला होता है तो प्रायः लिखा मिलता है ***"शेषम् फलम् प्रवच्छामि विश्वम् भरे न समयः"*** इसका तात्पर्य यह है कि उनका शेष फल विश्वम्भराध्याय में लिखा है। ज्योतिषी विश्वम्भराध्याय में उनके फल को ढूढ़ता है और उसका आगे का जीवन उत्कृष्ट हो जाता है। इसी प्रकार से यदि कोई महान व्यक्ति बाद में निम्न बन जाता है तो उसके लिए लिखा मिलता है कि

"शेषम् फलम् प्रवच्छामि जन्ममाध्याय के सुत" अर्थात इसके शेष फल को जन्ममाध्याय में पढूगा। जन्गमाध्याय में उसका फल मिलता है। जो निम्न कोटि का होता है।

2. **नागाध्याय–** नागाध्याय इसमें मध्यमवर्गीय जन्मपत्रियां प्राप्त होती है। प्रायः जन्मध्याय की बहुत से जन्मपत्रियों का फल नागाध्याय में मिलता है। अगर कोई सर्वसाधारण व्यक्ति थोड़ा सा मध्यम श्रेणी की स्थिति में आने वाला होता है तो उसके भावी फल को नागाध्याय में वर्णित किया गया है और प्रायः ये भी लिखा मिलता है कि नागाध्याय मे आने वाली जन्ममाध्याय में मिलते है।

3. **विश्वम्भराध्याय –** विश्वम्भराध्याय में महान व्यक्तियों की कुण्डलियां जैसे मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, विशिष्ट प्रशासनिक अधिकारी, नेता पूंजीपति तथा प्रसिद्ध व्यक्तियों की जन्मपत्रियां होती है। इनका सम्पूर्ण जीवन यदि उत्कृष्टता की ओर उन्नत होता है तो सम्पूर्ण फल इसी अध्याय मे प्राप्त हो जाता है। परन्तु पतन की अवस्था में जन्गमाध्याय व नागाध्याय में इनका फल मिलता है। नागाध्याय में बहुत फल प्राप्त होता है। प्रायः लिखा होता है ***"शेषम् फलम् प्रवच्छामि नागाध्याय न सशयः"***

4. **परिव्राजकाध्याय** – इस अध्याय में उच्च कोटि के साधुसन्तों की जन्मकुण्डलियां है। यदि कोई निम्न स्तर का व्यक्ति उच्च श्रेणी को प्राप्त करके संत होने की स्थिति में होता है तो उसके लिए लिखा प्राप्त होता है कि ***"शेषम् फलम् प्रवक्ष्यामि परिव्राजकाध्याय"*** में प्राप्त होता है। इस अध्याय में उच्च कोटि के संत तथा शकराचार्य बड़े–बड़े महात्मा, त्यागी, तपस्वी, लोगों की जन्मपंत्री विद्यमान है।

इस प्रकार रावण संहिता नाड़ी ज्योतिष का विलक्षण ग्रन्थ है जिसमें जातको की जन्मपत्रियां फल के साथ कही की गयी है। इसमें आश्चर्यजनक रूप से जातक के सम्बन्धी का नाम उनके पर्यायवाची शब्द आदि प्राप्त होता है। यह ग्रन्थ पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं है। देवरिया से प्राप्त होने वाली रावण संहिता में आदि अंत का कुछ पता नहीं है और न ही कोई पृष्ठांक है यदि समग्र ग्रन्थ प्राप्त हो जाये और इसका प्रकाश सम्भव हो सके तो ज्योतिष जगत का एक बहुमूल्य कार्य होगा।